शोध मंथन Vol. XII No.II April-June 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

'पंजाब के कला सरताज'– प्रोफ़ेसर एस.एल. पराशर

डॉ0 कविता सिंह

ऐसोसिएट प्रोफ़ेसर

सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट,

पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

ईमेलः singhart6@gmail.com

प्राप्तिः 11.03.2021
स्वीकृतः15.06.2021

सारांश

इस शोधपत्र में एक अनूठे चित्रकार व मूर्तिकार– एस.एल.पराशर की कला यात्रा को बारीकियों व ईमानदारी से समझने का प्रयास किया गया है। एस.एल. पराशर का जीवन एक 'फ़ीनिक्स' पक्षी की तरह था जो राख व विनाश से उभरकर आकाश की ओर उड़ सकता है। वर्ष 1947 में भारत के विभाजन में पूर्णता अपना सब कुछ खो बैठे शरणार्थियो में से आप एक ऐसे कलाकार थे जिन्होंने दोबारा अपनी कला व विवेक से अनेका–अनेक अनूठी कलाकृतियाँ व मूर्तिकला के नमूनों की सृजना की जिनको पंजाब ही नहीं पूरे भारतवर्ष में सराहा गया। आपका जीवन सादगी, सहनशीलता व संवेदनाशीलता का बेमिसाल मिश्रण था।

मुख्य शब्दः *समकालीन मूर्तिकला, पंजाब, विभाजन, मेयो स्कूल ऑफ आर्ट, लाहौर, एस.एल. पराशर, फोरमैन क्रिश्चिन कॉलेज, लाहौर, प्रोफ़ेसर एम.ए. अजीज, वी.पी. करमरकर, एम.एस. रंधावा, गर्वमेन्ट स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट, शिमला, स्कल्पचर म्यूरल, ओपन एर गार्डन स्कल्पचर।*

प्रस्तावना

पुरातन काल से ही भारत वर्ष में मूर्तिकला की विशेष परंपरा रही है तथा भारतीय शिल्पकार अपनी अद्भुत व विचित्र शैली में अनेका–अनेक मूर्तिकला के अनूठे नमूनों का सृजन करते रहे हैं। भारतीय मूर्तिकला पूरे विश्व भर में एक गौरवशाली स्थान प्राप्त किए हुए है। सदियों से ही पत्थर, लकड़ी व धातु में मूर्तिकारों ने अपनी कला कौशल के जौहर दिखाए हैं। हमारी पुरातन सभ्यताओं–'हड़प्पा' और 'मोहनजोदड़ों' में भी इस कला का प्रचलन रहा तथा प्रमुखयता उस काल के टेराकोटा के खिलौने, मिश्रित धातु की मूर्ति व मुद्रायें आज भी भारत के अनेकों संग्रहालयों में सुसज्जित हैं जिनमें पत्थर से बनी पुजारी की मूर्ति व धातु से बनी नाचती हुई नर्तकी की आकृति आज भी कला इतिहासकारों को मंत्र–मुग्ध करने में समर्थ है। भारत के कई हिस्सों में पत्थर की मूर्तियों को तराशने का कौशल इसलिए विकसित हुआ क्योंकि यहाँ पर विभिन्न

प्रकार की विशालकाय चट्टानों का भंडार पाया जाता है और पत्थर ही एक ऐसा माध्यम है जो सदियों तक संभाला जा सकता है। पत्थर व धातु की मूर्तियों का विषय–विशेष अक्सर धार्मिक और आध्यात्मिक विचारों को प्रतीकात्मक रूप से प्रकट करते हुए, भारतीय अमूल्य विचारधाराओं का प्रचालन व संरक्षण करना भी रहा। इसी कारण देवी–देवताओं के दिव्य स्वरूपों को तराशते हुए यहाँ शानदार व भव्य मंदिरों, मठों और भवनों का निर्माण हुआ। यहाँ तक कि विश्व में शायद पहली बार शिल्पकला व मूर्तिकला के ग्रंथ–'शिल्पशास्त्र' की रचना भी भारत में ही की गई, जिसमें मूर्तिकला की विभिन्न सृजनात्मक तकनीकों, माध्यमों व स्वरूपों के मूल तत्वों, नियमों व आधारों का गहराई से वर्णन व विश्लेषण किया गया है।

यह गौरव व हर्ष का विषय है कि पंजाब का भी समकालीन मूर्तिंकला में विशेष स्थान है। यहाँ के मूर्तिकारों ने पूरे भारत वर्ष में ही नहीं अपितु पूरे विश्व भर में अपनी कला का डंका बजाते हुए अपनी कला–कौशल का ध्वज फहराया है। आज पंजाब समकालीन मूर्तिंकारों का कला संग्रह भारतीय व अंतराष्ट्रीय संग्रहालयों में सुशोभित है। वर्ष 1947 में भारत ने स्वतंत्रता पाई किन्तु इसी वर्ष पंजाब का विभाजन होने के कारण पंजाब का प्रमुख कला केंद्र लाहौर पाकिस्तान में रह गया जहाँ पर कई प्रसिद्ध कलाकारों व मूर्तिंकारों ने अपने अद्‌भुत कला कौशल का परिचय दिया था, क्योंकि वहाँ पर अंग्रेज़ों द्वारा बनाए गए सुप्रसिद्ध ''मैयो स्कूल ऑफ आर्टस, लाहौर (1875)'' में चित्रकला के साथ–साथ मूर्तिंकला का भी गहन अध्ययन होता था। इन पंजाबी चित्रकारों और मूर्तिंकारों ने लाहौर से पलायन करके पूरबी पंजाब में अपना कार्य आरंभ किया क्योंकि लाहौर का 'मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स' भी शिमला में 1951 में पुनः–स्थापित किया गया। यहाँ भी इन कलाकारों को अपनी कला को निखारने का बहुत अच्छा माहौल मिला। अगर पंजाब की समकालीन मूर्तिंकला की बात की जाए तो प्रोफ़ेसर सरदारी लाल पराशर का नाम तथा उनका बहुमूल्य योगदान हमेशा स्मरण रहेगा क्योंकि आपने ही आधुनिक मूर्तिकला के कुछ बेमिसाल आयाम स्थापित किए तथा लीक से हटकर अनेक मूर्तियों व म्यूरल का सृजन किया जिनमें भारत की पुरातन मूर्तियों के धार्मिक व आध्यात्मिक पहलुओं को तिलांजलि देते हुए उन विषयों व माध्यमों का चुनाव किया जो सामाजिक व लोक कला से प्रभावित रहते हुए भी एकदम अंतराष्ट्रीय समकालीन कला के नमूनों से किसी भी रूप में कम नहीं लगते।

एस.एल. पराशर (1) का जन्म 7 अप्रैल, 1904 गुजरांवाला (पश्चिम पंजाब), पाकिस्तान में हुआ। आपका रूझान बचपन से ही कला व साहित्य की ओर रहा तथा आपने प्रसिद्ध अग्रणीय श्रेणी के ''फोरमैन क्रिश्चिन कॉलेज, लाहौर'' से अंग्रेज़ी साहित्य में पोस्ट–ग्रेजुएशन किया तथा इस दौरान चित्रकला व मूर्तिंकला का भी अध्ययन करते रहे।[1] डॉ0 अल्का पांडे– प्रसिद्ध कला इतिहासकार एवं कला आलोचक लिखती हैं, *''एस.एल. पराशर जी की असली कला साधना तब शुरू हुई जब वे अपने प्राध्यापक –एम.ए. अज़ीज के संपर्क में आए। प्रोफ़ेसर अजीज से मिलकर पराषर के जीवन में एक नया मोड़ आ गया क्योंकि अजीज जी ने यह भांप लिया था कि उनके*

विद्यार्थी में कला की बेमिसाल प्रतिभा है जिसको चमकाया जाना चाहिए। प्रोफेसर अजीज तब तक नहीं थमें जब तक उनकी प्रेरणा ने एस.एल. पराशर को एक निपुण 'पोर्ट्रेट पेन्टर,' 'लैन्ड्स्केप आर्टिस्ट और 'क्ले मॉडलर' व शिल्पकार नहीं बना दिया। उन्होंने मूर्तिकला में नए–नए प्रयोग करने की शुरूआत की। दूसरे पड़ाव में एस.एल. पराशर को विख्यात मूर्तिकार– 'वी.पी. करमरकर' से मिलकर बंबई में उनके स्टूडियो में काम करने का अवसर प्रदान हुआ। इस दौरान आपने इस कला की हर बारीकी तक तकनीकों को बाखूबी समझा तथा अपनी मूर्तिकला के कौशल को चमकाया।''[2]

विभाजन के समय के पश्चात् पूरबी पंजाब में पश्चिम पूरबी पंजाब में पश्चिम पंजाब से आने वाले शरणार्थियों का तांता लग गया तथा हर तरफ निराशा, दुःख, भय व अनिश्चतता का काल था। हज़ारों शरणार्थी बेघर हुए तथा अनेको ने अपने परिजनों को खो दिया। यह समय हर किसी के मन को दहला देने वाला था। शरणार्थियों के पुनर्वास के लिए शहर–शहर, गाँव–गाँव कैंप लगाए जा रहे थे जिनका संचालन करने का काम 'डा0 एम.एस.रंधावा (आई.सी. एस)' को सौंपा गया जो कुशल शासक होने के साथ–साथ कोमल ह्रदय वाले कमा प्रेमी व पारखी थे। उन्होंने एस.एल. पराशर को अपने साथ मिलाकर अम्बाला के पास 'बलदेव नगर कैंप, में वर्ष 1947 में कार्यरत किया ताकि वे शरणार्थियों के कल्याण के कार्य में साथ दे।[3] यह स्थान ऊँचे –ऊँचे मिट्टी के टीलों व पहाड़ियों से बना हुआ था। दिन के कार्य के बाद एस.एल. पराशर अक्सर इन मिट्टी के टीलों से चिकनी मिट्टी निकाल कर छोटी व बड़ी मूर्तियाँ बनाने लगे। इस तरह उनकी कला की भूख भी मिटती रही व मानसिक तनाव भी घटने लगा। तत्पश्चात 1951 में आप को शिमला के 'गर्वनमेंट स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड़ क्राफ्ट' का प्रधानाचार्य बनाया गया। यहाँ पर उन्होंने अपने मन में छुपी वेदनाओं तथा दुःखों को अपने रेखाचित्रों, पेंटिंगज़ और मूर्तियों में व्यक्त किया। इन सब कलाओं का विषय पंजाब से शरणार्थियों की दुर्दशा व पीड़ा का दर्पण था। शिमला में लकड़ी की बहुतायत थी इस कारण आपने कई सुंदर व प्रभावशाली मूर्तियाँ लकड़ी में भी घड़ी। शांत माहौल में बैंठकर वे अक्सर इन कलाओं का गहन अध्ययन करते रहे। नए आयाम व रास्ते ढूँढते रहे ताकि हर नई कलाकृति में और निखार आ सके। उल्लेखनीय मूर्तियों व रेखाचित्रों में– 'रिफ्यूजी वूमन, (1947–48) (2), 'रागी' (1950–60) (3), 'दरवेश' (1950–60) (4), 'पार्टीशन स्केच' (1947–50) (5), 'हिल वूमन' (1952–53), 'थर्स्ट' (1952), 'लोन्ली पिल्ग्रिम (6)' और 'गाडिस ऑफ डेथ' का ज़िकर आता है।[4]

एस.एल. पराशर को बढ़ईगीरी, लोहे और लाख के काम में निपुणता हासिल थी। वर्ष 1959 में सेवा–निवृत्ति होने के बाद एस.एल.पराशर दिल्ली चले गए और वहाँ उन्होंने स्वतंत्र रूप से मूर्तिकला का कार्य करना शुरू कर दिया। 1963 में उन्होंने निदेशक, क्षेत्रीय डिजाइन विकास केन्द्र, बंबई का पद संभाला और अगले तीन वर्षों तक वहाँ काम किया। वापिस वर्ष 1967 में दिल्ली आकर वे अमूर्त कला शैली में काम करने लगे। आधुनिक वास्तुकला शैली में बनाए गए

सरकारी कॉलेज, चण्डीगढ़ के लिए एक 'स्कल्पचर म्यूरल' का सुझाव वास्तुकार द्वारा दिया गया तथा एस.एल. पराशर ने पहली बार एक विशाल लीक से हटकर नई आधुनिक कला शैली को सन्मुख रखते एक 'स्कल्पचर म्यूरल' का डिज़ाइन तैयार किया जिसे विश्व प्रसिद्ध प्रांसिसी वास्तुकार–'ली. कोर्बुजिए' ने स्वीकृति दी। स्मरण रहे चण्डीगढ़ शहर को बनाने वाले यही वास्तुकार थे।[5] ''विद्या वंलज (स्टेट्स ऑफ नॉलेज) **(7)**'' नामक इस 'स्कल्पचर म्यूरल' ने सुप्रसिद्ध कला समीक्षक– 'मुल्कराज आनंद' का ध्यान आकर्षित किया और वे लिखते है, *''एस. एल. पराशर ने अपने विकास के एक उपजाऊ चरण में प्रवेश किया, जो जीवन के अर्थ के लिए एक ईमानदार खोज की बारीकियों को प्रकट करने की संभावना है।''*[6]

'विद्या वलंज' स्कल्पचर म्यूरल के निर्माण के बाद, उन्होंने विभिन्न संस्थानों और सरकारी निकायों के लिए म्यूरल और मूर्तियाँ बनाने का कार्य जारी रखा जिनमें से एक 'गणित जन्त्र' नामक म्यूरल उन्होने पंजाब विश्वविद्यालय के गणित विभाग में वर्ष 1973 में बनाया। वर्ष 1967 में उन्होंने ब्रह्ममांडीय ऊर्जा के विषय पर 'निर्माण भवन', नई दिल्ली के लिए सिरेमिक टाइल्स के साथ 40 फीट X 20 फीट के म्यूरल की सृजना की।**(8)** चण्डीगढ़ के फेफड़ों के नाम से जानी जाने वाली 'लईयर वैली' में भी आपने कई कन्क्रीट के माध्यम में 'ओपन ऐरे गार्डन स्कल्पचर' बनाए।**(9)** दिल्ली में भी विभिन्न स्थानों व संस्थानों पर भी उन्होंने कई स्कल्पचर बनाए जैसे की –'कुमार आर्ट गैलरी, सुंदर नगर, नई दिल्ली', 'टेलिकम्पयूनिकेशन बिल्डिंग, जनपथ, नई दिल्ली' एवं 'गंधर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली'। इस तरह उन्होंने अपने आप को एक निपुण आधुनिक शिल्पकार, चित्रकार व मूर्तिकार स्थापित कर लिया।[7]

गहरी सोच व विचारों वाले एस.एल. पराषर का यह मानना था कि कला का सीधा संबंध मनुष्य के अंतर्मन व दिव्य सोच से प्रभावित होता है तथा कलाकार के सूक्ष्म मन से उपजी कला ही सच्ची कला मानी जानी चाहिए। बाहरी दुनिया की चकाचौंध व भ्रमित करने वाली छवियाँ व विषय तो केवल व्यर्थ विचार हैं जिनमें सच्चाई अक्सर बहुत कम दिखाई देती है। मन की साधना तथा सोच से ही पनपती कलाकृति ही अनूठी हो सकती है। 'आधुनिकता' उनके विचार में तो केवल एक मानसिक विधा है इस पर किसी खास मनुष्य का एकल अधिकार नहीं है। यह समझ व सूझ–बूझ की ही एक विधा है तथा वस्तुओं को देखने व समझने का नजरिया है। एस. एल. पराशर आगे लिखते हैं, *''मेरी कला के बिम्ब अपनी माटी व सभ्यता से पनपते हैं। मैं जानबूझकर उन्हें किसी आधुनिक साँचे में नहीं ढ़ालना चाहता ताकि वो समकालीन लगें या आश्चर्यचकित करने वाले हों। मेरे चित्रों व मूर्तियों का मुख्य तत्व सरलता तथा सहजता है। अनगिनत आकार व आकृतियाँ नित मन के चित आकाश में उभरती रहती हैं तथा मैं उनके सच्चे स्वरूप में अपनी कलाकृतियों में संजोने की कोशिश करता हूँ। यही आकृतियाँ मुझे विशेष दुनिया की ओर ले जाती हैं जहाँ मेरे मन की उड़ान ले जाती है। मेरी कला शैली व तकनीक सादगी में जटिलता का परिचय है।''*[8]

'रूपलेखा' में प्रकाशित 'राम धमिजा' के लिखे एक शोधपत्र में वे लिखते हैं, *''एस.एल. पराशर की मूर्तियों और स्कल्पचर म्यूरल में युवाओं सी ऊर्जा और अनुकरण के साथ परिपक्व संवेदनशीलता है।''*

कुछ ही ऐसे कलाकार होते हैं जिनके कलात्मक कौशल की सीमा नहीं होती, एस.एल. पराशर जी उस उच्च श्रेणी के कलाकारों में शामिल हैं जिनको हर विधा, तकनीक तथा माध्यम में निपुणता है। आपके रेखाचित्रों में मानवता की वेदना तथा पंजाब की संस्कृति व जीवन शैली के समावेश का अद्‌भुत चित्रण हैं जिसमें पंजाबियत की खुशबू, सहजता व जिंदादिली का भी परिचय है। आपने कभी भी अपनी पृष्ठभूमि से हटकर मसनूई विषयों को छुने का कोई प्रयास नहीं किया। आपकी कलाकृतियों व चित्रों के पात्र असल जिंदगी में जीते–जागते इंसानों का वर्णन करते हुए इंसानों के हृदयों की गहराईयों में कूदकर उनके अंतर–मन में उठती भावनाओं व दुःख–दर्दों का सजीव तर्जुमा करते हैं। आपके चित्रों के रंग भी बहुत विषादपूर्ण व पृथ्वी के रंगों से उगते हुए प्रतीत होते हैं नकली चका–चौंध से कोसो दूर।

वो आने वाली पीढ़ियाँ उनके विवेक व कला साधना से बहुत बड़ी प्रेरणा ले सकती है कि किस तरह सादगी व सच्चाई से एक कलाकार आकाश में उड़ान भर सकता है तथा समुंदर की गहराईयों से अनमोल रत्न बटोर कर भारत वर्ष की कला को समृद्ध बनाने में सक्षम हो सकता है। लगन, साधना, ईमानदारी और संवेदनशीलता इस कलाकार के गहने थे। आपने निरंतर कार्य करते हुए पंजाब व भारत की चित्रकला व मूर्तिकला को समृद्ध बनाने का योगदान दिया।

संदर्भ ग्रंथ

1. *पराशर प्रज्ञापरमिता ;* 1992, *एस.एल. पराशहर–मोडस ऑफ एक्स्प्रेशन इन म्यूरल आर्ट,* निर्मलनीर, ए–71, साउथ–एक्स्टेंशन, पार्ट–2, नई दिल्ली, पृ0 **331**
2. पांडे, अल्का; 2004, *अ मोमन्ट इन टाइम–एस.एल.पराशर– अ रेट्रस्पेक्टिव,* सेन्टर फॉर वियूअल आर्ट, हैबिटैट सेन्टर, नई दिल्ली, पृ0 **7**
3. त्रिपाठी, शैलजा; 24 जुलाई, 2013, *डिलिनीऐटिंग पेन,* द हिन्द
4. धमीजा, जसलीन; 2004, *पराशर साहिब : द पेंटिंग दरवेश*। प्रज्ञापरमिता पराशर एण्ड सैन्डो स्टनर (संपादक), एस.एल. पराशर (1904–1990), टाइम, स्पेस, लाइट, कान्शस्निस, सरनीर फाउडेशन, नई दिल्ली, पृ0 **27**
5. पराशर, प्रज्ञापरमिता; 1992, *एस.एल. पराशर –मोडस ऑफ एक्स्प्रेशन इन म्यूरल आर्ट,* निर्मलनीर, ए–71, साउथ एक्स्टेंशन, पार्ट–2, नई दिल्ली, पृ0 **721–22**
6. मागो, पी.एन; 2004, *द स्पिरिचूअल इन पराशर आर्ट*। प्रज्ञापरमिता पराशर एण्ड सैन्डी स्टनर (संपादक), एस.एल. पराशर (1904–1990), टाइम, स्पेस, लाइट, कान्शस्निस, सरनीर फांउडेशन, नई दिल्ली, पृ0 **34**
7. पराशर, प्रज्ञापरमिता ; 1992, *एस.एल. पराशर–मोडस ऑफ एक्स्प्रेशन इन म्यूरल आर्ट,* निर्मलनीर, ए–71, साउथ एक्स्टेंशन, पार्ट–2, नई दिल्ली, पृ0 **14–30**

8. पांडे, अल्का ; 2004, *अ मोमन्ट इन टाइम–एस.एल. पराशर– अ रेट्रस्पेक्टिव*, सेन्टर फॉर वियूअल आर्ट, हैबिटैड सेन्टर, नई दिल्ली, पृ0 **8–9** ।

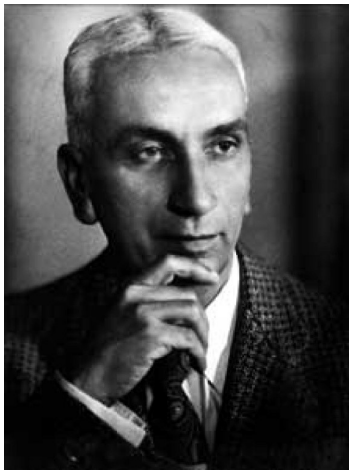

Plate No. 1

Plate No. 2

Plate No. 3

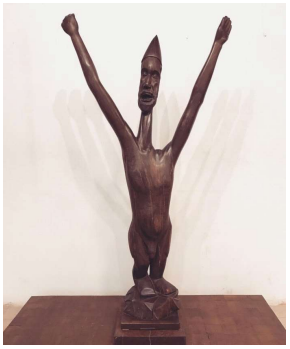

Plate No. 4

Plate No. 5

Plate No. 6

Plate No.7

Plate No. 8

Plate No. 9